हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-27 ♦देहरादून - रविवार 04 मई 2025 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/-

नगर निगम, एमडीडीए 3 दिन के भीतर लैण्ड बैंक विवरण प्रस्तुत करें: डीएम

देहरादून। जिलाधिकारी सविन बंसल ने ऋषिपर्णा सभागार में देहरादून शहर की प्रस्तावित एलिवेटेड कॉरिडोर परियोजना के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। इस दौरान कार्यदायी संस्था निर्माण निगम लोनिवि द्वारा परियोजना की प्रजेंन्टेशन के माध्यम से प्रस्तुति दी गई।

जिलाधिकारी ने कहा कि रिस्पना–बिंदाल एलिवेटेड कारिडोर परियोजना व्यापक जनहित तथा मुख्यमंत्री प्राथमिकता का प्राजेक्ट है तथा इसकी मॉनिटिरिंग की जा रही है। डीएम का इस प्राजेक्ट पर विशेष फोकस है, उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि एसडीएम एवं परियोजना से जुड़े नोडल अधिकारी उनके सामने एक ही छत के नीचे बैठकर कार्य करेंगे। उन्होंने अधिकारियों को आपसी समन्वय से इस प्राजेक्ट को धरातल पर उतारने के निर्देश दिए। फील्ड में अधिकारियों को सैक्टर, जोनवार आंविटत करते हुए फील्ड सम्बन्धी कार्यों मौका मुआवना अन्य फील्ड सम्बन्धी कार्यवाही संम्पादित कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने एसएलओ भूमि अधिाग्रण सम्बन्धी कार्यवाही तेजी लाने तथा नगर निगम एवं एमडीडीए को भूमि के लैण्ड बैंक सम्बन्धी रिपोर्ट 03 दिन के भीतर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

ज्ञातब्य है कि एलिवेटेड कॉरिडोर रिस्पना नदी पर 2500 करोड़ की लागत से 11 किमी, एवं बिंदाल नदी पर 3750 करोड़ की लागत से 15 किमी लम्बे चार लेन एलिवेटेड कॉरिडोर निर्माण कार्य प्रस्तावित है। जिसके लिए इन नदियों के भीतर विद्युत लाईन, हाईटेंशन लाईन, सीवर लाईन इत्यादि का नदी से बाहर विस्थापन किया जाना है। एलिवेटेड रोड के साथ नदी के दोनो किनारों पर रिटेनिंग वॉल निर्माण, एवं बाढ सुरक्षा कार्य के साथ ही नदी के पर्यावरणीय स्वास्थ्य सुधार एवं सौन्दर्यीकरण आदि कार्य

किये जाने है। रिस्पना एलिवेटेड कोरिडोर में प्रभावित कुल भूमि क्षेत्रफल 44.6421 हेक्टेयर है सरकारी भूमि 43.5427 हे0 निजी भूमि 1.099 हे0, जिसमें 1120 संरचनाएं प्रभावित हो रही हैं जिनमें स्थायी 771, अस्थायी 349 हैं। बिन्दाल ऐलिवेटेड कोरिडोर कुल 43.9151 हेक्टयर क्षेत्र प्रभावित हो रहा है, जिनमें सरकारी भूमि 26.1926, निजी भूमि 17.7225 हेक्टेयर, प्रभावित वन भूमि 2.25 हेक्टेयर हैं तथा कुल 1494 संरचनाएं प्रभावित हो रही हैं जिनमें स्थायी संरचनाएं 934, प्रभावित अस्थायी 560 है।

मुख्यमंत्री करेंगे चारधाम यात्रा का शुभारंभ

ऋषिकेश। चारधाम यात्रा का औपचारिक शुभारंभ ऋषिकेश से शनिवार को होगा। इसका आयोजन चारधाम ट्रांजिट एवं पंजीकरण केंद्र परिसर में

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे। आयोजन में शामिल देश–दुनिया के तीर्थयात्रियों और स्थानीय लोगों को पहाड़ के पारंपरिक गढ़ भोज के रूप में भड्डू की दाल और भात परोसा जाएगा।

गुरुवार को संयुक्त रोटेशन यात्रा व्यवस्था समिति के कार्यालय में प्रेसवार्ता हुई। समिति के अध्यक्ष भूपाल सिंह नेगी ने बताया कि पहली बार यात्रा के शुभारंभ में गढ़ भोज परोसने का फैसला लिया गया है। कहा कि दुनियाभर से तीर्थदर्शन के लिए यात्री उत्तराखंड पहुंचते हैं। इनमें से अधिकांश रजिस्ट्रेशन को ऋषिकेश में आते हैं और यहीं से यात्रा प्रारंभ करते हैं। शनिवार को यात्रा के शुभारंभ का कार्यक्रम में समिति ने तय किया है। होगा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी 10 बजे तीर्थ यात्रियों की बसों को ट्रांजिट केंद्र से हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ करेंगे।

नेगी ने बताया कि कार्यक्रम में पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज, वन मंत्री सुबोध उनियाल, क्षेत्रीय विधायक एवं पूर्व मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल भी शामिल होंगे।

मजदूर दिवस पर दिया धरना

पौड़ी(आरएनएस)। अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर उमेश डोभाल स्मृति ट्रस्ट, नागरिक कल्याण समिति और सीटू के नेतृत्व में गठित मई दिवस आयोजन समिति के आह्वान पर सभी श्रमिक संगठनों, ट्रेड यूनियनों, कर्मचारियों, छात्रों, युवाओं, महिलाओं, व्यापार संगठनों ने धरना दिया। गुरुवार को हेमवती नंदन बहुगुणा की मूर्ति स्थल पर धरना देते हुए वक्ताओं ने आवाज दो, हम एक हैं, दुनिया के मेहनतकश एक हो के नारे के साथ धरना देते हुए सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, महंगाई, ठेका प्रथा, निजीकरण, और श्रम कानूनों की अनदेखी, पर विचार-विमर्श और एकजुटता का प्रदर्शन किया गया।

भू -अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध भी लगातार कार्यवाही जारी

देहरादून(आरएनएस)। देवभूमि में भूमि प्रबंधन तथा भू व्यवस्था एवं सुधार के लिए विधानसभा से पारित उत्तराखंड (उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (संशोधन) विधेयक, 2025 पर महामहिम राज्यपाल की मुहर लगने के साथ ही प्रदेश में सशक्त भू कानून लागू हो गया है। इसी के साथ प्रदेशवासियों की जनभावना के अनुरूप उत्तराखंड में कृषि और उद्यान भूमि की अनियंत्रित बिक्री पर पूरी तरह रोक लग गई है।

मजदूरों से आज भी गुलामों सा बर्ताव किया जाता है

विकासनगर। मजदूर दिवस पर गुरुवार को चाय बागान श्रमिक संघ ने गुडरिच स्थित चाय फैक्ट्री में ध्वजारोहण कर

शहीद मजदूरों को नमन करने के साथ ही अपने हक के लिए आवाज बुलंद की। मजदूर संघों के नेताओं ने कहा कि बीते दस साल में उनका शोषण बढ़ा है। चाय बागान श्रमिक संघ के महामंत्री देवानंद पटेल ने कहा कि बीते दस साल में सरकार ने मजदूर विरोधी नीतियां लागू कर उनका आर्थिक और शारीरिक शोषण किया है। औद्योगिक घरानों और पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए श्रमिकों के अधिकार छीने जा रहे हैं। देश की अर्थव्यवस्था को बनाए रखने में सबसे बड़ा योगदान श्रमिकों को होता है, लेकिन आर्थिक तौर पर फायदा पूंजीपतियों को मिलता है। मजदूरों से आज भी गुलामों सा बर्ताव किया जाता है। सीटू के प्रांतीय महामंत्री लेखराज ने कहा कि स्थानीय स्तर पर मजदूरों की हालत बेहद खराब है। सेलाकुई औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिकों को ठेका प्रथा पर रखा जा रहा है, जिससे उन्हें श्रम कानूनों के तहत कोई लाभ नहीं मिलता है। औद्योगिक इकाइयों में श्रमिकों को मानक से कम मानदेय दिया जाता है, जिसमें से भी एक बड़ा हिस्सा ठेकेदार ले लेता है। सीपीएम के जिला सचिव शिव प्रसाद देवली ने केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि सरकार दस साल से सिर्फ गरीबों, किसानों और मजदूरों का शोषण कर रही है। उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए किसानों की जमीनों का जबरदस्ती अधिग्रहण किया जा रहा है। कहा कि पछुवादून में चाय बागानों को साल दर साल उजाड़ा जा रहा है। बीते साल 120 बीघा में चाय बागान उजाड़ कर परंपरागत खेती की जा रही है। चाय बागान में न्यूनतम मजदूरी प्रतिदिन 476 रुपये है, लेकिन अधिकतम मजदूरों को दो सौ से 250 प्रतिदिन ही मजदूरी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि अपने हक के लिए मजदूरों को आवाज बुलंद करनी होगी। इस दौरान नरेश कुमार, हरीश, विजय, चंदपाल यादव, जगदीश, महेश कुमार, गगन, रविंद्र, अनीता, उर्मिला आदि मौजूद रहे।

सम्पादकीय

संवृद्धि का आधारः ग्राम्य विकास

हिमगिरौ निर्जिता गङ्गा यमुनायाश्च उद्गमे।
तिष्ठत्ययं तपोभूमिः देवभूमिर्विराजते।।
शौर्येण वीरभूमिः सा पर्वतानां सदा विभा।
खेलभूमिर्यशोवृद्ध्या कीर्तिं लभत भारतम्।।

अर्थात्

हिमालय के शिखरों पर जहां से गंगा और यमुना का उद्गम होता है, वहाँ स्थित यह उत्तराखंड तपोभूमि एवं देवभूमि के रूप में सुशोभित है।

यहां रहने वाले व्यक्तियों के पराक्रम और शौर्य के कारण यह भूमि, वीरभूमि कहलाती है। वर्तमान में खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त कर यह खेलभूमि बन कर भारत के गौरव को बढ़ा रही है।

भारतीयता का हृदय गांव में बसता है, उसमें ही उसकी बहुगुणित शक्ति निहित है।पर्यटन के माध्यम से जब ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होता है, तो राज्य की समृद्धि सुनिश्चित होती है।

ग्रामीण पर्यटन के विकास से न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है,बल्कि संस्कृति,परंपरा और प्राकृतिक सौंदर्य भी जीवंत हो उठता है।किसान और गांववासी आर्थिकी के प्राण हैं।ग्रामीण पर्यटन के विकास से से रोजगार के नए नए अवसर मिलते हैं। इसके अलावा,पर्यटक गांवों की प्राचीन परंपराओं,हस्तशिल्प, कला,संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ते हैं, जिससे सर्वांगीण विकास होता है। हमारे पहाड़ का ग्रामीण जीवन समृद्ध हों,आधारभूत सुविधाओं में अभिवृद्धि हो,जिससे जनसाधारण में सुखद अनुभूति हो। सर्वांगीण विकास के लिए ग्राम का विकास आवश्यक है।हमारे पहाड़ के गांव के प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के उपयोग के सुनियोजित उपयोग से आर्थिक संवृद्धि पानी है।पहाड़ के जंगलों में पैदा होने वाले शुद्ध शहद से लेकर सीढ़ीदार खेतों में उगाया जाने वाला आर्गेनिक मंडुआ, झंगोरा, गहथ,राजमा और हैंडमेड ऊनी वस्त्र से लेकर हैंडिक्राफ्ट तक सभी के उत्पादन को बढ़ावा देना है। इनकी बिक्री के लिए ई-कामर्स प्लेटफार्म पर ब्रांडिंग करनी है।राज्य के समग्र विकास के लिए,गांवों की आर्थिकी मजबूत की जानी जरूरी है।पहाड़ के गांवों के सौहार्दपूर्ण, स्निग्ध मधुर अतीत की पुनः रौनक लौटानी है, रिश्तों में जीवंतता लानी है। पुरातनता और प्रगतिशीलता के सामंजस्य से सुख, समृद्धि ,समरसता लानी है। पहाड़ के गांव की आर्थिक संवृद्धि के लिए, आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए अपने प्रयास जारी रखने हैं।पर्यावरण संरक्षण जल संरक्षण और वनौषधियों के प्रसंस्करण से आर्थिक संवृद्धि लाकर देवभूमि के हर घर में खुशियां लानी है स्वरोजगार और स्वाध्याय की धुन जगानी है। गांव की संवृद्धि राष्ट्र के विकास का आधार है।देवभूमि में पर्यटन के विकास व गांवों की आत्मनिर्भरता हेतु हमारे प्रयास अहर्निश जारी रहेंगे।।

जय देवभूमि उत्तराखण्ड!!जय भारत !!

डॉ.(श्रीमती)गार्गी मिश्रा

दल बदल के मौसम में आहत लोकतंत्र

लगभग चार दशक पहले तक पूरे देश में चुनाव एक ही समय होते थे। विधानसभा और लोकसभा के लिए भारत की जनता वोट करती थी। अपने प्रतिनिधि चुनती थी। लोकतंत्र के मंदिर में अपने-अपने प्रतिनिधियों को भेजने के लिए मानो संगम का मेला ही लगता था। धीरे-धीरे परिस्थितिवश देश के अनेक भागों में चुनाव अलग-अलग समय पर होने लगे, जिसका यह परिणाम हुआ कि अपना देश हर वर्ष ही चुनावी संग्राम में जूझता है। जहां कहीं पहले यह आदर्श वाक्य था कि साध्य के लिए साधन भी शुद्ध चाहिए। अब साधनों की शुचिता तो अतीत की बात हो गई। साध्य अर्थात चुनावों में सफलता, सत्ता प्राप्ति एकमात्र लक्ष्य हो गया। उसके लिए साम-दाम-दंड-भेद या इससे भी कुछ आगे है तो इसका प्रयोग किया जा रहा है।

जब से 2022 में पांचों विधानसभा के चुनावों की घोषणा हुई तभी से राजनेताओं ने एक तो आश्वासनों की बौछार की। मुफ्तखोरी बनी नहीं रहेगी, अपितु बढ़ेगी इसका भरोसा दिया। जनता को रोजगार, उद्योग-धंधे, चिकित्सा शिक्षा के स्वावलंबन की कोई चर्चा नहीं की और इसके साथ ही सत्ता की दौड़ में लगे ये राजनेता दल बदलने के सारे पिछले रिकार्ड तोड़ रहे हैं। हो सकता है कि चुनावों के नामांकन की तिथि तक सैकड़ों और तथाकथित नेता दल बदल लेंगे। इनको तथाकथित इसलिए कहा है क्योंकि ये नेतृत्व नहीं कर रहे, अपितु अपनी-अपनी सत्ता या परिवार की सत्ता सुरक्षित रखने के लिए ही काम कर रहे हैं।

कभी हरियाणा से निकलाख़ आया-राम गया-राम का व्यंग्य वाक्य अब पूरे देश में वैसे ही फैल गया जैसे केरल में एक कोरोना रोगी मिलने के बाद पूरा देश कोरोना की पहली, दूसरी और अब तीसरी लहर में जकड़ा तड़प रहा है। आज का प्रश्न यह है कि समाज दल-बदलुओं को स्वीकार क्यों करता है? आमजन का यह कहना है कि राजनीतिक पार्टियां उत्तर दें, वे उन लोगों के लिए अपने दरवाजे पलक पांवड़े बिछाकर हर समय खुले क्यों रखते हैं, जो सिद्धांतहीन हैं पर सत्ता के लालच में दौड़ते हुए उनके दरवाजों पर आते हैं, फूलों का आदान-प्रदान होता है, पटे या पटके गलों में डाले जाते हैं और दल बदलू नेता इतने समभाव वाले दिखाई देते हैं कि निंदा, स्तुति, मान-अपमान से उन्हें कोई अंतर ही नहीं पड़ता। प्रश्न एक यह भी है कि जो लोग उस पार्टी के वफादार नहीं, जिससे उन्हें पहचान मिली, सम्मान मिला, राजपद प्राप्त हुए और उनकी जिंदाबाद के नारे गली-गली में लगे, ऐसे लोग दूसरी पार्टी में जाकर उनके कैसे वफादार हो जाएंगे। जो लोग सार्वजनिक सभाओं में अपनी जनता के दुख-सुख में साथी बनने की घोषणा करते रहे वे केवल अपने परिवार की विधानसभा सीट के लिए ही क्यों दल बदल जाते हैं? अपने मतदाताओं को धोखा देते हैं?

अभी तो हालत यह हो गई जो उत्तर प्रदेश ने देखा, पंजाब ने देखा, उत्तराखंड ने दिखाया कि ये याद ही नहीं रहता कि दल बदलने वाले नेता पहले किस-किस गली का चक्कर लगाकर आए हैं और वर्तमान पार्टी में आने से पहले किस पार्टी में ध न-सत्ता कमा रहे थे। उत्तर प्रदेश का उदाहरण तो बड़ा अफसोसजनक है। सरकार के एक मंत्री कांग्रेस से बीएसपी में, बीएसपी से समाजवादी पार्टी में, फिर भाजपा में और भाजपा से वापस समाजवादी पार्टी में चले गए। संभवतः वहां और कोई ऐसी बड़ी पार्टी नहीं, जिसकी दलदल में वह डुबकी लगा सकें। आश्चर्य यह भी है कि दल बदलने की बीमारी का एक सीजन विशेष ही होता है। वर्षों तक एक पार्टी में सत्तासुख भोगने के बाद अचानक ही इन्हें दलितों की पीड़ा, कमजोरों के साथ हो रहा अन्याय, युवकों की बेरोजगारी का दर्द तंग करने लगता है और फिर एक नहीं बल्कि आधा दर्जन से ज्यादा मंत्री और विधायक दूसरी पार्टी का झंडा और डंडा थाम लेते हैं। पंजाब में तो दो बहुत दुखद, पर रोचक दल बदल हुए। एक एमएलए भाजपा में गए। फूलों के हार पहनाए, पर अगले दिन ही वापस कांग्रेस में चले गए। अमृतसर जिले के एक कांग्रेस नेता चौबीस घंटे भी कांग्रेस छोड़कर भाजपा में न काट सके। वहां उन्हें जितने फूल और पटके मिले थे उतने घंटे बिताए बिना ही वे वापस कांग्रेस में आ गए। पंजाब का शायद ही ऐसा कोई शहर बचा हो जहां यह बीमारी स्वार्थी दल बदली की न फैल रही हो। उत्तराखंड का भी एक ऐसा ही उदाहरण है। उसके अनुसार अपनी पुत्रवधू के लिए जब टिकट प्राप्त नहीं कर सके तो फिर वापस कांग्रेस में चले गए। समाचार क्यों मिलता है भाजपा का पलटवार, कांग्रेस की पूर्व महिला अध्यक्षा भाजपा में आ गई। आदान-प्रदान हो रहा है। आप जानते ही हैं कि सत्तापतियों और ध नपतियों को शगुन ज्यादा मिलता है। मुलायम सिंह की पुत्रवधू भी चुनाव लडने के लिए यूं कहिए घरेलू राजनीतिक क्लेश के कारण अब भाजपा की ध्वज वाहिका बन चुकी हैं।

बढ़ती आर्थिक असमानता के खतरे समझें

'वर्ल्ड इकानॉमिक फोरम' के दावोस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए प्रध नमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनियाभर के उद्यमियों को भारत में आकर व्यवसाय करने की दावत दी है। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि भारत आर्थिक विकास की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत दुनिया को आशा का एक सुंदर गुलदस्ता दे रहा है। इसमें हम भारतीयों की जनतंत्र में अटूट आस्था है, 21वीं सदी को सशक्त बनाने वाली तकनीक है और हमारी वह प्रतिभा और स्वभाव है जो दुनिया को प्रेरणा दे सकता है। आजादी के अमृत महोत्सवी वर्ष में दुनिया को भारत का यह संदेश निश्चित रूप से भरोसा दिलाने वाला है और हम भारतीयों को भी इस बात का अहसास कराने वाला है कि 'अच्छे दिन' कहीं आस-पास ही हैं।

इन पिछले 75 सालों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमने बहुत कुछ अर्जित किया है, जिस पर हम गर्व कर सकते हैं। दुनिया को उम्मीद का जो गुलदस्ता देने की बात प्रधानमंत्री ने दावोस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए की है, वह गुलदस्ता हम भारतीयों के लिए भी है। इस बारे में दुनिया के देश क्या सोच रहे हैं, क्या कह रहे हैं यह तो आने वाला कल ही बताएगा, पर वर्ल्ड इकानॉमिक फोरम के इसी सम्मेलन में 'आक्सफेम' की एक रिपोर्ट भी सामने आयी है, जिस पर हम भारतीयों को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। इस रिपोर्ट में कुछ आंकड़े हैं जिनका हमारे जीवन से सीधा रिश्ता है। ये आंकड़े हमारी गरीबी के संबंध में हैं। 'आक्सफेम' द्वारा जारी की गयी इस रिपोर्ट के अनुसार मार्च 2020 से लेकर नवंबर 2021 तक की अवधि में भारत में साढ़े चार करोड़ से अधिक लोग 'अति गरीबी' की स्थिति में पहुंच गये हैं। पूरी दुनिया में जितने लोग गरीबी की इस स्थिति में हैं उसकी आधी संख्या है यह। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह अवधि कोरोना-काल की है, जिसमें सारी दुनिया ने आर्थिक मार को झेला है, लेकिन हमारी स्थिति अधिकांश देशों की तुलना में कहीं अधिक चिंताजनक है। आक्सफेम की रिपोर्ट बताती है कि हमारे देश में इस कोरोना-काल में 84 प्रतिशत परिवारों की कमाई में कमी आयी है। जहां तक बेरोजगारी का सवाल है, शहरी क्षेत्रों में यह दर पंद्रह प्रतिशत से भी अधिक हो गयी है, स्वाभाविक है ग्रामीण क्षेत्रों में यह बेरोजगारी और अधिक होगी। बेरोजगारी के साथ यदि महंगाई के आंकड़े भी जोड़ दिये जाएं तो स्थिति की भयावहता और बढ़ जाती है। इस स्थिति का तकाजा है कि आज जब हम आर्थिक विकास की दिशा में बढ़ते कदमों की बात करें तो इस गरीबी और बेरोजगारी की तरफ भी नजर रखें। उम्मीद का जो गुलदस्ता हम दुनिया को दे रहे हैं उसकी गंध देश के उन अस्सी करोड़ परिवारों तक भी पहुंचनी चाहिए जिन्हें कोरोना-काल में मुफ्त खाद्यान्न देने की जरूरत देश को पड़ गयी थी। यह जरूरत इस बात का भी स्पष्ट संकेत है कि 'अच्छे दिनों' की आहट की जो बात हम करते हैं, वह अभी बहुत ध मी है।

भारत में यह मौसम चुनावों का है। देश के पांच राज्यों में चुनावों का शोर सुनाई दे रहा है। हर राजनीतिक दल अपनी खूबियों के बजाय प्रतिपक्षी की कमियों की ओर इशारा करने में लगा है। नये-नये सामाजिक समीकरण बनाये जा रहे हैं, ध ार्मिक और जातीय ध्रुवीकरण की कोशिशों के शोर में गरीबी का जरूरी मुद्दा कहीं खो-सा गया है।

लगभग आधी सदी पहले हुए एक राष्ट्रीय चुनाव में गरीबी सबसे बड़ा मुद्दा बना था। 'गरीबी हटाओ' के नारे पर चुनाव जीता गया था तब। मतदाता ने उम्मीद की थी कि यह सिर्फ नारा या जुमला नहीं रहेगा। पर उम्मीद पूरी नहीं हुई। ऐसा नहीं है कि इस दौरान हमारी सरकारों ने इस दिशा में कुछ करना नहीं चाहा, पर हकीकत यह है कि कोशिश के पीछे उस ईमानदारी का अभाव था जो होनी चाहिए थी। इसी का परिणाम है कि पूरी दुनिया में गरीबी के जाल में फंसे लोगों की आधी संख्या हमारे भारत में है। आज हमारे नेता कभी हमें मंदिर-मस्जिद के नाम पर भरमाते हैं और कभी राजपथों की लम्बाई तथा मूर्तियों की ऊंचाई के नये प्रतिमानों से। आर्थिक असमानता और विषमता के प्रतिमान भी हमने स्थापित कर रखे हैं इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा।

कुछ अर्सा पहले एक रिपोर्ट आयी थी वैश्विक गैर-बराबरी के बारे में। इसके अनुसार देश की राष्ट्रीय आय का आधे से अधिक हिस्सा उस तबके के पास जा रहा था जिसे 'सुपर रिच' कहा जाता है और आधे भारतीय राष्ट्रीय आय के 13 प्रतिशत पर गुजारा करने के लिए मजबूर हैं। हमारे मध्यम वर्ग और निम्न मध्यम वर्ग की स्थिति भी गरीबी की स्थिति से बहुत अच्छी नहीं है। इस वर्ग को राष्ट्रीय आय का लगभग एक तिहाई हिस्सा ही मिलता है।

सवाल उठता है यह आर्थिक स्थिति हमारी राजनीति का, हमारे चुनावों का मुद्दा क्यों नहीं बनती? हैरानी की बात है कि चुनाव प्रचार में हमारे राजनेताओं को इस संदर्भ में कुछ कहने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। चुनाव का सारा गणित जातियों के आधार पर चल रहा है। जाति के आध ार पर टिकट बंटते हैं, जाति के आधार पर वोट मांगे जाते हैं- और वोट दिये भी जाते हैं! बढ़ती आर्थिक असमानता और सामाजिक अस्थिरता हमारी राजनीति का विषय कब बनेगी?

कोरोना-काल में देश के अस्सी करोड़ परिवारों का मुफ्त पेट भरने का दावा करने वालों को इस बात की चिंता कब होगी कि अस्सी करोड़ परिवारों को मांग कर खाने के लिए मजबूर क्यों होना पड़ा? आज हमारे राजनीतिक दल आश्वासनों का ढेर लगा रहे हैं। एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर बोली लग रही है मतदाताओं को मुफ्त सुविधाएं देने की। मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, सम्मान निधि के नाम पर दी जाने वाली आर्थिक सहायता, मुफ्त गैस, मुफ्त लैपटॉप... इस सबकी जरूरत ही अपने आप में एक शर्मनाक स्थिति को बयां करती है। स्पष्ट है, हमारी नीतियों में कहीं न कहीं बहुत बड़ा खोट रहा है। हकीकत यह भी है कि हमारा राजनीतिक नेतृत्व दावा भले ही कुछ भी करता रहे, पर उसकी राजनीति का उद्देश्य सत्ता पाना, सत्ता में बने रहना ही रहा है। बदलनी चाहिए यह स्थिति। सत्ता नहीं, सेवा होना चाहिए हमारी राजनीति का उद्देश्य। बात तो सब करते हैं सेवक होने की, पर सेवा के नाम पर मेवा कमाने की प्रवृत्ति कम नहीं हो रही। पिछले दो साल में 'अति गरीबी' में पहुंच जाने वाले 4.6 करोड़ लोग यह सवाल पूछ रहे हैंख़ चुनाव-दर-चुनाव हमारे नेताओं की सम्पत्ति दोगुनी-तिगुनी कैसे हो जाती है? कैसे इन दो साल में देश में अरबपतियों की संख्या 102 से 142 हो गयी? उनकी सम्पत्ति 23.1 लाख करोड़ से बढकर 53.2 लाख करोड़ हो गयी? मैं दोहराना चाहता हूं, बढ़ती असमानता सामाजिक अस्थिरता को बढ़ा रही है। यह एक खतरनाक स्थिति का संकेत है।

कहीं इन वजहों से तो नहीं होता सिरदर्द

आजकल भागदौड़ भरी जिंदगी में आम इंसान को थकान, सिरदर्द, बुखार आना, ब्लड प्रेशर का घटना-बढ़ना जैसी कई बीमारियां बिन बुलाए आ जाती है। इन्हीं बीमारियों में से एक आम बीमारी है- सिरदर्द। वैसे तो यह सामान्य होता है, लेकिन कई बार यह गंभीर रूप भी धारण कर लेता है।

सिर दर्द एक ऐसी बीमारी है, जो हर उम्र के इंसान को होती है चाहे वो छोटे बच्चे हों या फिर बड़े। लेकिन, अक्सर सिर दर्द को लोग मामूली समझते हैं। वो इसके उपचार की तरफ ध्यान नहीं देते और एक गोली खाकर दर्द से जल्द राहत पाने की कोशिश करते हैं। मगर, जब हर बार सिर दर्द की समस्या हो, तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि इसके कारण मौत भी हो सकती है।

आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि सिरदर्द किन-किन कारणों से होता है और किन चीजों का सेवन करने से परहेज करना चाहिए।

किन वजहों से होता है सिरदर्द ?

*सिरदर्द कई प्रकार के होते हैं, जैसे अधिक या कम समय तक सोना, नींद पूरी न होने के कारण भी सिरदर्द हो सकता है।

*दांतों में दर्द के कारण भी सिरदर्द की शिकायत रहती है। दांतों में कीड़ा लगने, अक्ल दांत आने आदि से पूरे जबड़े में दर्द रहता है, जिससे सिरदर्द होता है।

*कभी-कभी नींद के बीच-बीच में टूटने के कारण भी सिरदर्द होता है।

*गर्मी में अधिक व्यायाम कर लेने से भी सिरदर्द शुरू हो जाता है, क्योंकि व्यायाम करते वक्त ग्लूकोज की मात्रा मांसपेशियों द्वारा खर्च कर ली जाती है और मस्तिष्क को ग्लूकोज नहीं मिल पाता।

*वैसे तनाव का पहला लक्षण ही सिरदर्द है। इसके अतिरिक्त निराशा, नींद न आना, थका हुआ महसूस करना आदि भी तनाव के कारण होते हैं।

*कुछ दवाईयां भी सिरदर्द का कारण होती हैं, जैसे ह्रदय रोगों या हाई ब्लड प्रेशर होने पर ली जाने वाली दवाईयां। बेहद आवश्यक होने पर ही इन दवाईयों का सेवन करें।

आंखों के चश्मे के नंबर में बदलाव के कारण भी सिरदर्द होता है। जिन लोगों को आंखों का चश्मा न लगा हो और उन्हें सिरदर्द की शिकायत लगातार हो तो ऐसे में नेत्र विशेषज्ञ के पास जाकर आंखों को दिखाना चाहिए व नजर कमजोर होने पर चश्मा लगाना चाहिए।

*अधिक जुकाम, मौसम में बदलाव, अधिक धूम्रपान आदि के कारण भी सिरदर्द की शिकायत रहती है। अत: मौसमानुसार साफ सफाई का ध्यान रखते हुए बीमारी से बचाव का प्रयास करें।

सिरदर्द में न लें ये चीजें

चॉकलेट

चॉकलेट्स में भी सेरोटोनिन का स्तर बढ़ाने वाले अमीनो एसिड-टायरामाइन की अधिकता होती है। चॉकलेट का अत्याधिक सेवन औपको सिरदर्द तो देता ही है, साथ ही चिकित्सक माइग्रेन के रोगियों को चॉकलेट न खाने की सलाह देते हैं।

कॉफी

रोज कॉफी पीने वाले लोग एक दिन कॉफी न पिएं तो उन्हें सिरदर्द हो जाता है। वजह यह नहीं है कि उन्होंने कॉफी नहीं पी, वजह यह है कि वह रोज कॉफी पीने के आदी हो चुके हैं। ऐसे में कॉफी न पीने पर उन्हें सिरदर्द, घबराहट या चिढ़चिढ़ापन जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

चीज़

नाश्ते में या स्नैक्स में चीज़ युक्त डाइट लेना भले ही कितना भी स्वादिष्ट क्यों न लगे लेकिन इससे भी आपको सिरदर्द या माइग्रेन की समस्या हो सकती है। इसमें फैट्स के साथ-साथ टायरामाइन अधिक मात्रा में होता है जिससे आपको सिरदर्द की शिकायत हो सकती है।

आइसक्रीम

वैसे तो यह मौसम आइस क्रीम खाने का कतई नहीं है लेकिन गर्मियों के इंतजार के साथ-साथ आइस क्रीम खाने की इच्छा तो बढ़ती ही जाती है। लेकिन जरूरत से ज्यादा आइसक्रीम खाना आपके सिरदर्द का कारण हो सकता है, इस बात को आप कतई न भूलें। अक्सर चिकित्सक आइसक्रीम के सेवन को भी माइग्रेन का ट्रिगर मान सकते हैं।

एल्कोहल

शराब के सेवन के बाद अक्सर लोगों को सिरदर्द, जिसे कई बार हम हैंगओवर भी कहते है, बहुत परेशान करता है। एल्कोहल में टायरामाइन नामक तत्व अधिक मात्रा में होता है जो सिरदर्द व डीहाइड्रेशन की स्थिति पैदा करता है।

मुझे अपने दम पर कामयाबी मिली है : आरती सिंह

टेलीविजन चैनल एंड टीवी पर प्रसारित हो रहे लोकप्रिय धारावाहिक 'वारिस' में अंबा का किरदार निभा रहीं छोटी पर्दे की मशहूर अभिनेत्री आरती सिंह के लिए छोटा या बड़ा पर्दा मायने नहीं रखता, उन्हें बस दमदार किरदार निभाना पसंद है। फिल्मी परिवार से ताल्लुक रखने वाली आरती का कहना है कि उन्होंने अपने दम पर सफलता हासिल की है।

आरती को कलर्स चैनल पर 2010 में आए धारावाहिक 'थोड़ा है बस थोड़े की जरूरत है' के मुग्धा कुलकर्णी और 2011 के धारावाहिक 'परिचय' में निभाए गए सीमा चोपड़ा के किरदार ने घर-घर में प्रसिद्ध कर दिया था।

एक खास बातचीत में आरती से जब पूछा गया कि डेली सोप 'वारिस' के अंबा के किरदार से जुडने की क्या वजह रही तो उन्होंने बताया, ''इस धारावाहिक की सबसे खास बात इसका मुद्दा है, जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। पंजाब की पृष्ठभूमि पर आधारित इस धारावाहिक में मैं एक ऐसी मां का किरदार निभा रही हूं, जो समाज की रूढ़िवादी सोच के कारण अपनी बेटी की बेटे के रूप में परवरिश करती है।''

उन्होंने बताया, ''इस धारावाहिक के प्रत्येक दृश्य में मुझे दमदार अभिनय प्रदर्शित करना होता है। एक कलाकार के तौर पर इस धारावाहिक में मैं जो काम कर रही हूं वह मेरे लिए काफी संतुष्टि भरा है। हमेशा से ही मुझे दमदार किरदारों की तलाश रही है, और जब मुझे इस धारावाहिक का प्रस्ताव मिला, तो मैंने इसमें काम करने का इरादा बना लिया।''

आरती ने 2007 में जी टीवी पर प्रसारित होने वाले डेली सोप 'मायका' से सोनी के किरदार के रूप में छोटे पर्दे पर डेब्यू किया था। इसके बाद 2008 में आए धारावाहिक 'गृहस्थी' में रानो, 'थोड़ा है बस थोड़े की जरूरत है' के मुग्धा और धारावाहिक 'परिचय' में सीमा के किरदार ने आरती को छोटे पर्दे पर बड़ी पहचान दिलाई।

वारिस में अंबा अपनी बेटी की समाज से छुपते-छुपाते एक बेटे की रूप में परवरिश करती हैं। आरती से जब पूछा गया कि एक बेहद खास मुद्दे पर आधारित यह कार्यक्रम समाज में क्या बदलाव ला सकता है इस पर उन्होंने बताया, ''इस धारावाहिक की पटकथा समाज की उस सोच पर वार करती है, जो लडक़ों को लड़कियों से ज्यादा महत्वपूर्ण समझते हैं। इसमें एक महिला की कहानी दिखाई गई जो अपने परिवार, रिश्तेदार और आसपास के माहौल के कारण इतना बड़ा कदम उठाती है। ''आरती आगे कहती हैं, ''यह केवल एक शहर या तबके को नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की हकीकत बयां करती है, जो हर हाल में संतान के रूप में बेटे की चाह रखते हैं। हमारा धारावाहिक अगर ऐसे सैकड़ों लोगों में कुछ लोगों को भी प्रभावित करता है, उन्हें सोचने पर मजबूर करता है कि बेटियां भी बेटों के समान होती हैं, और कुछ मायनों में उनसे बढक़र होती है, तो हमारी कोशिश सफल हो जाएगी।''

आरती ने अपने करियर में कई भूमिकाएं निभाईं हैं, वह इस किरदार से अपने आपको किस हद तक करीब पाती हैं, यह पूछे जाने पर उन्होंने कहा, ''इस किरदार से मैं बहुत अधिक करीब हूं। अंबा के किरदार को मैंने बनाया है। मेरे जीवन में फिलहाल अंबा से महत्वपूर्ण कुछ और नहीं है।''

पूरी अब फीके के नहीं, चटपटे स्वाद में

इवनिंग स्नैक्स, जिसमें वेरायटी भी है और टेस्ट भी। तो अब जब भी कुछ टेस्टी और स्पाइसी खाने का मन करे, तो दही बटाटा पूरी खाएं।सामग्री- फिलिंग के लिए 2-3 आलू उबले व मैश किए हुए2 टेबल स्पून हरी धनिया और पानी पूरी मसाला पाउडर। अन्य सामग्री 1 पैकेट पानी पूरीडेढ कप अंकुरित मूंग दाल नमक और हल्दी पाउडर मिले पानी में उबली हुई1 कप लाल चना भिगोकर हल्दी पाउडर व नमक मिले पानी में उबले हुए1 आलू उबला व कटा हुआआधा कप बूंदी।मसाला पाउडर के लिए- 1-1 टीस्पून चाट मसालाकाला नमकलाल मिर्च पाउडर और जीरा पाउडरसबको मिला लें।पानी के लिए- डेढ-डेढ कप हरी धनिया और पुदीने के पत्ते1 टुकडा अदरक4-5 हरी मिर्च 1/3 कप इमली का पल्प1 टेबलस्पून काला नमकचुटकीभर दालचीनी पाउडर2-3 टेबलस्पून पानी पूरी मसाला2 कप ठंडा पानीनमक स्वादानुसार।अन्य सामग्री-मीठी चटनी2 कप दहीपानी पूरी का मसाला और हरी धनिया।आगे की स्लाइड्स पर पढें बटाटा पूरी बनाने की विधि को... बनाने की विधि-फिलिंग की सारी सामग्री को मिला लें। सर्विंग के समय पानी पूरी में ऊपर से छेद करके फिलिंग की साम्रगी, मीठी चटनी, दही पानी पूरी मसाला पाउडर और हरी धनिया डालकर सर्व करें।

बच्चों को छात्रवृत्ति बांटी, शिक्षण व्यवस्था को विद्यालय एक लाख रुपये दिए

पिथौरागढ। ग्राफीक एरा यूनिवर्सिटी के चेयरमैन ने हीरा देवी भट्ट विवेकानंद

विद्या मन्दिर इंटर कॉलेज के मेधावियों को छात्रवृत्ति बांटी। गुरुवार को चेयरमैन डॉ. कमल घनसाला, यूकोस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत, ग्राफीक एरा भीमताल के निदेशक कर्नल नायर विद्यालय पहुंचे। इस दौरान उन्होंने विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था की सराहना की। डॉ. घनसाला ने विद्यालय प्रबंधन को एक लाख रुपये देने की घोषणा की। साथ ही हाईस्कूल मैरिट सूची में रहे रोहित सिंह घींघा को दो वर्षो तक प्रतिवर्ष पांच हजार रुपये छात्रवृत्ति देने की भी घोषणा की। कक्षा आठ में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को भी दो वर्ष तक तीन-तीन हजार प्रतिमाह छात्रवृत्ति देने की बात कही।

उन्होंने कम्प्यूटर लैब को हाईटैक बनाने व कम्प्यूटर उपलब्ध कराने के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षा के लिए 200 पुस्तकें देने की बात कहीं। विद्यालय के प्रधानाचार्य नवीन चन्द्र शर्मा ने मदद के लिए आभार जताया। यहां निवर्तमान जिपं सदस्य जगत सिंह मर्तोलिया आदि मौजूद रहे।

सीएचसी में सर्जन की मांग को लेकर मुस्लिम यूथ मोर्चा ने किया प्रदर्शन

रुद्रपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में सर्जन समेत विभिन्न मांग को लेकर

उत्तरांचल मुस्लिम यूथ मोर्चा ने प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने नारेबाजी करते हुए कहा कि यदि शीघ्र ही सीएचसी में सर्जन की तैनाती नहीं की गई तब वह आंदोलन करेंगे। गुरुवार को उत्तरांचल मुस्लिम यूथ मोर्चा अध्यक्ष दानिश इकबाल अहमद की अगुवाई में कार्यकर्ताओं ने सीएचसी के आपातकालीन कक्ष के बाहर प्रदर्शन किया। इस दौरान दानिश इकबाल अहमद ने कहा कि सरकारी अस्पताल में सर्जन व हड्डी रोग विशेषज्ञ का पद रिक्त होने के कारण के कारण आम जनता को प्राइवेट अस्पताल में जाना पड़ रहा है। जिसके कारण उसे आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ रहा है।

उन्होंने अस्पताल में ईसीजी और अल्ट्रासांउड के साथ ही कुत्ते काटने के इंजेक्शन की व्यवस्था इमरजेंसी में करने की मांग की। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि शीघ्र उनकी मांगों को पूरा नहीं किया गया तब वह आंदोलन करेंगे। प्रदर्शन करने वालों में जावेद मलिक, जावेद खान, आरिफ, सोनू, मुन्ना, नूर अली आदि थे।

मेरा कार्य मेरी पसंद, मेरा वोट मेरी आवाज थीम पर श्रमिक दिवस पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

अल्मोड़ा(आरएनएस)। अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर जिला निर्वाचन कार्यालय, उद्योग विभाग और श्रम विभाग के संयुक्त तत्वावधान में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य श्रमिकों के अधिकारों को सम्मानित करने के साथ-साथ उन्हें मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने और मतदान के प्रति प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम की थीम श्मेरा कार्य मेरी पसंद, मेरा वोट मेरी आवाजश रही, जो श्रमिकों को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति सजग बनाने पर केंद्रित रही। जनपद स्तर पर मुख्य कार्यक्रम रघुनाथ सिटी मॉल और हिमाद्री हैंडलूम, अल्मोड़ा में आयोजित किए गए। रघुनाथ सिटी मॉल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सहायक लेबर कमिश्नर आशा पुरोहित ने श्रमिकों को उनके अधिकारों की जानकारी देते हुए लोकतांत्रिक भागीदारी की अहमियत बताई। उन्होंने श्रमिकों से संबंधित अधिनियमों एवं प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला और समाज के विकास में श्रमिकों की भूमिका को रेखांकित किया। जिला समन्वयक स्वीप विनोद कुमार राठौर ने मतदाता पंजीकरण प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए उपस्थित लोगों से अपील की कि वे अपने घर-परिवार में ऐसे लोगों को अवश्य प्रोत्साहित करें, जिनकी आयु 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है या होने वाली है, और जिनका नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं है। कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थित सभी लोगों को मतदाता शपथ भी दिलाई गई। श्रम विभाग के प्रतिनिधियों द्वारा श्रमिक कल्याण से संबंधित योजनाओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। यहां भी मतदाता जागरूकता पर विशेष बल दिया गया और उपस्थित श्रमिकों को मतदान की शपथ दिलाई गई। रघुनाथ सिटी मॉल में सहायक लेबर कमिश्नर आशा पुरोहित, जिला श्रम प्रवर्तन अधिकारी राबिया परवीन, सहायक निर्वाचन अधिकारी भरत सिंह रावत, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी बिपिन चंद्र जोशी और मॉल प्रबंधन के अधिकारी उपस्थित रहे। वहीं, हिमाद्री हैंडलूम कार्यक्रम में जिला उद्योग अधिकारी मीरा बोरा, सहायक जिला उद्योग अधिकारी विनीता मटेलिया, आजीविका समन्वयक और सीएलएफ हवालबाग के कार्यकर्ताओं समेत बड़ी संख्या में श्रमिक और कर्मचारी शामिल हुए।

श्रमिकों की मांगों को लेकर इंटक का डाकपत्थर में प्रदर्शन

विकासनगर। राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक) ने मई दिवस पर डाकपत्थर में प्रदर्शन कर बस यूनियन के लिए भूमि आवंटित करने, सरकारी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन बहाली समेत श्रमिकों की अन्य समस्याओं का समाधान करने और की मांग प्रदेश सरकार से की है। वक्ताओं ने कहा कि सरकार श्रमिकों के लिए सिर्फ कागजों में योजनाएं संचालित कर रही है, जबकि धरातल पर श्रमिकों का शोषण हो रहा है। इंटक के जिलाध्यक्ष तनवीर आलम ने कहा कि केंद्र सरकार ने कोविड काल के बाद जो मजदूर विरोधी श्रम कानून बनाए हैं, उन्हें तत्काल प्रभाव से निरस्त किया जाना चाहिए। ठेका, आउटसोर्स, ट्रेनी, अप्रेंटिस प्रणाली को समाप्त कर समान कार्य का समान वेतन दिया जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार कई सरकारी विभागों का निजीकरण करने की कोशिश कर रही है, जिसका विरोध किया जाएगा। उन्होंने प्रदेश के भूमिहीन मजदूरों को प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना के तहत भूमि आवंटित करने, देहरादून-डाकपत्थर बस यूनियन के लिए भूमि आवंटित करने की मांग भी प्रदेश सरकार से की है। इस दौरान, गोपाल वाल्मीकि, सुरेश कुमार, जसवीर तोमर, प्रेम सिंह नेगी आदि मौजूद रहे।

उत्तरकाशी में बारिश के साथ ओलावृष्टि

उत्तरकाशी। जिले में गुरुवार को दोपहर बाद मौसम ने करवट बदली। मौसम में आए बदलाव के कारण जिला मुख्यालय में जमकर बारिश और ओलावृष्टि हुई। यमुनोत्री धाम में भी बारिश शुरू हो गई है। जबकि गंगोत्री धाम में तेज हवाओं के साथ बारिश की आशंका बनी है। बारिश के बीच श्रद्धालुओं ने यमुनोत्री धाम में मां यमुना के दर्शन किए। बदलते मौसम का यात्रियों ने धामों में जमकर लुत्फ भी उठाया। गुरुवार को दोपहर तक तेज धूप रही। दोपहर तीन बजे के बाद मौसम ने अचानक करवट बदली। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ ही निचले क्षेत्रों में आसमान झमाझम बरसना शुरू हुआ। जिला मुख्यालय में एक से डेढ़ घंटे तक लगातार जमकर बारिश हुई, जबकि कुछ देर हल्की ओलावृष्टि भी देखने को मिली। बारिश से बढ़ती गर्मी से लोगों ने राहत की सांस ली। वहीं बड़कोट समेत यमुनोत्री धाम में भी जमकर बारिश हुई। बारिश के बीच श्रद्धालुओं ने कतार में लग कर मंदिर के दर्शन किए। धाम में बारिश की तेज फुहारों का यात्री आनंद लेते दिखे। गंगोत्री धाम में भी फिलहाल तेज हवाओं के साथ देर शाम तक बारिश की संभावना बनी है। इसके अलावा हर्षिल, मुखबा, भटवाड़ी आदि क्षेत्रों में भी आसमान बारिश की संभावना से घिरा है।

गवाणी गांव में खुली ग्रामीण बैंक की शाखा

पौड़ी। उत्तराखण्ड ग्रामीण बैंक शाखा-गवाणी के नए शाखा परिसर का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर पोखड़ा ब्लाक के गवाणी क्षेत्र में एक सफल ग्राहक संपर्क कार्यक्रम (आउटरीच प्रोग्राम) का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य बैंक की योजनाओं, सेवाओं और डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं के बारे में ग्रामीणों को जागरूक करना था। कार्यक्रम में बैंक की प्रमुख योजनाओं और बैंकिंग सेवाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। बैंक मित्र और ग्राहक सेवा केंद्र संचालन की प्रक्रिया और लाभों पर भी चर्चा की गई। कृषि क्षेत्र से जुड़े एक सफल कृषक भागेंद्र बिष्ट ने अपनी सफलता की कहानी साझा की, जिससे अन्य कृषकों को प्रेरणा मिली और उन्हें बैंक से ऋण लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

समलौण पौधा रोपकर की दांपत्य जीवन की शुरुआत

कोटद्वार। भाबर क्षेत्र के पदमपुर मोटाढ़ाक निवासी नव दंपत्ति अतुल कंडवाल एवं पूजा कंडवाल ने अपने दांपत्य जीवन की शुरुआत आम के पौधे को रोपकर व उसके संरक्षण के संकल्प के साथ की। ग्राम्य एकता प्रगति प्रेमांजलि समागम समिति के तत्वाधान में नव दंपत्ति ने पौधरोपण किया। इस अवसर पर समिति संरक्षक सेनि. डा. चंद्रमोहन बड़थ्वाल ने कहा कि सन् 1981 से संस्था प्रत्येक स्मृति दिवस एवं ऐतिहासिक दिवस पर असल देव अभियान के तहत वृक्षारोपण करती आई है। कहा कि पर्यावरण असंतुलन से धरा को बचाने के लिए पौधरोपण आवश्यक है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आर्फसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।